इस्लामी पहनावा (3 का भाग 1)

ववरिण: इस पाठ में हम हजिाब का अर्थ समझेंगे और पुरुषों और महलिाओं दोनों के पहनावे के बारे में जानेंगे। हम इस्लामी पहनावे के उद्देश्य पर भी चर्चा करेंगे और समझेंगे कि कैसे यह समाज की रक्षा करने में मदद करता है और स्वस्थ संबंधों को बनाए रखता है।

द्वारा Aisha Stacey (© 2012 IslamReligion.com)
प्रकाशति हुआ 08 Nov 2022 - अंतमि बार संशोधति 07 Nov 2022

श्रेणी: पाठ >इस्लामी जीवन शैली, नैतकिता और व्यवहार > ड्रेस कोड

पाठ का उद्देश्य:

पुरुषों और महलिाओं दोनों के पहनावे की शर्तों को जानना और समझना।

अरबी शब्द:

- ????? - शरीर के वे अंग जनि्हें ढक कर रखना चाहिए।

- ???? - वह व्यक्ति जो खून, ववािह या स्तनपान से कसिी दूसरे व्यक्ति से संबंधति हो, चाहे पुरुष हो या महलिा। कसिी महलिा/पुरुष को उसके पति/माता, भतीजे/भतीजी, चाचा/चाची, आदि से शादी करने की अनुमति नहीं है।

- ??? - प्राकृतकि या अंतर्नहिति शर्म और वनिय की भावना।

- ????? - हजिाब शब्द के कई अलग-अलग अर्थ हैं, जनिमें छुपाना, छुपना और पर्दा शामलि हैं। यह आमतौर पर एक महलिा के हेडस्कार्फ़ को संदर्भति करता है और व्यापक रूप से मामूली कपड़ों और व्यवहार को संदर्भति करता है।

इस्लाम जीवन जीने का एक संपूर्ण तरीका है, प्रत्येक पहलू को हमारे नर्माता ने खुश और स्वस्थ समुदायों को आगे बढ़ाने और स्वर्ग में शाश्वत आनंद के मार्ग को आसान बनाने के लिए बनाया है। आज के समाज में शालीनता को कमजोरी या असुरक्षा की नशिानी माना जाता है। इस्लाम में ऐसा नहीं है, यहां शालीनता को अपने और दूसरों का सम्मान माना जाता है। जसि हया के साथ हर इंसान पैदा होता है उसे क़ीमती चीज़ समझा जाता है। इसलिए इस्लाम में महलिाओं और पुरुषों दोनों के लिए पहनावे का नयिम है। इसका उद्देश्य समग्र रूप से समाज की रक्षा करना और मामूली पहनावे और व्यवहार को बढ़ावा देना है। यह लगिों के बीच एक पर्दा बनाता है और हमें अपने जीवन को मर्यादा, सम्मान और आदर के साथ जीने के योग्य बनाता है।

इस्लाम में महलिाओं को बहुत सम्मान दयिा जाता है और पर्दा करने के इस्लामी नयिमों का उद्देश्य उनकी गरमिा और सम्मान की रक्षा करना है। पर्दा करने के संबंध में सबसे अधकि इस्तेमाल कयिा जाने

वाला शब्द हिजाब है। इस्लाम के इतिहास में सभी योग्य मुस्लिम विद्वान इस बात से सहमत हैं कि पहनावे की शर्तों को पूरा करना सभी मुस्लिम पुरुषों और महिलाओं का दायित्व है। उन्होंने इन शर्तों को क़ुरआन और सुन्नत में मिले सबूतों पर आधारित किया है। नीचे हिजाब के विषय में क़ुरआन के सबसे प्रसिद्ध छंदो और पैगंबर मुहम्मद का सबसे प्रसिद्ध कथन है।

> **"ऐ पैगंबर! कह दो अपनी पत्नियों, अपनी पुत्रियों और आस्तिको की स्त्रियों से कि डाल लिया करें अपने ऊपर अपनी चादरें। ये अधिक समीप है कि वे पहचान ली जायें (स्वतंत्र आदरणीय महिला के रूप में)। फिर उन्हें दुःख न दिया जाये और अल्लाह अति क्षमि, दयावान् है। (क़ुरआन 33:59)**
>
> **और विश्वासी स्त्रियों से कहें कि अपनी आंखे नीची रखें और अपने गुप्तांगों की रक्षा करें (पापों से) और अपनी शोभा और गहनों का प्रदर्शन न करें, सिवाय उसके जो दिखाई दे... (क़ुरआन 24:31)**

[illegible], [illegible]।[illegible]।[1]

महिला का हिजाब

हिजाब का उद्देश्य अवराह को ढंकना है और अवराह अलग-अलग स्थितियों में और लोगों के विभिन्न समूहों मे अलग होता है।

हम सार्वजनिक रूप से और गैर- महरम पुरुषों के बीच एक महिला के लिए हिजाब पहनने की शर्तों से शुरू करते हैं। इन शर्तो को पूरा करने के बाद, महिला जो चाहे वह पहन सकती है।

1. हिजाब (आवरण) चेहरे और हाथों को छोड़कर पूरे शरीर को ढकने वाला होना चाहिए।
2. यह पारदर्शी या टाइट नहीं होना चाहिए। टाइट कपडे भले ही त्वचा के रंग को छिपाते हैं, लेकिन फिर भी ये शरीर या उसके भाग के माप और आकार को दिखाते हैं, और सुस्पष्ट चित्र बनाते हैं।
3. यह विपरीत लिंग का ध्यान आकर्षित करने वाला नहीं होना चाहिए; इसलिए यह असाधारण या अत्यधिक भव्य नहीं होना चाहिए। न ही ज्वैलरी और मेकअप दिखना चाहिए।
4. यह घमंड या लोकप्रियता या प्रसिद्धि पाने के लिए पहना जाने वाला वस्त्र नहीं होना चाहिए। पैगंबर की महिला साथी काले और अन्य गहरा रंग पहनती थीं लेकिन अन्य रंगों को पहनने की भी अनुमति है; एक महिला को घमंड के कारण रंगीन कपडे नहीं पहनने चाहिए।
5. इसमें परफ्यूम नहीं लगाना चाहिए। यह निषिध शरीर और वस्त्र दोनों पर लागू होता है।
6. यह पुरुषों द्वारा पहने जाने वाले कपड़ों से मिलता-जुलता नहीं होना चाहिए।
7. यह गैर-मुस्लिमों के विशिष्ट कपड़ों से मिलता-जुलता नहीं होना चाहिए।

पुरुषों का पहनावा

> **आप विश्वासियों से कहें कि अपनी आंखे नीची रखें और अपने गुप्तांगों की रक्षा करें (पापों से)। ये उनके लिए अधिक पवित्र है, वास्तव में, अल्लाह भली-भांति परिचित है उससे, जो कुछ वे कर रहे है। (क़ुरआन 24:30)**

पुरुषों के पहनावे की भी शर्ते हैं, हालांकि इन्हे कभी-कभी अनदेखा कर दिया जाता है या अच्छी तरह से नहीं समझा जाता है। कुछ शर्तें महिलाओं के शर्तो के समान हैं, लेकिन अन्य विशेष रूप से पुरुषों से संबंधित हैं।

1. नाभि से घुटनों तक का शरीर का हिस्सा ढका होना चाहिए।

2. यह गैर-मुस्लिमों के विशिष्ट कपड़ों से मिलता-जुलता नहीं होना चाहिए। पश्चिमी कपड़े जो एक निश्चित समूह या संप्रदाय को नही दर्शाते हैं, उन्हें आमतौर पर अनुमति दी जाती है।

3. यह महिलाओं द्वारा पहने जाने वाले कपड़ों से मिलता जुलता नहीं होना चाहिए।

4. यह टाइट या पारदर्शी नहीं होना चाहिए।

5. पुरषों को रेशम से बने वस्त्र, या सोने से बने आभूषण पहनने की अनुमति नहीं है।

6. पुरुषों के लिए दो तरह के अलंकरण वर्जित हैं लेकिन महिलाओं के लिए इनकी अनुमति है। वे हैं, सोना और शुद्ध रेशम से बने वस्त्र।

इस्लाम के विद्वान पूर्ण रूप से सहमत हैं कि किसी के भी सामने पुरुषों की नाभि से घुटनों तक (घुटनों सहित) ढंका होना चाहिए। इसका एकमात्र अपवाद उसकी अपनी पत्नी है।

अंत में, पुरुषों को यह सुझाव दिया जाता है कि वे ऐसे कपड़े न पहनें जो टखनों से नीचे हों।

अगले पाठ में हम अवराह की परिभाषा और अधिक बारीकी से समझेंगे और इस तथ्य पर चर्चा करेंगे कि अवराह के नियम स्थिति के अनुसार बदलते हैं।

फुटनोट:

[1] अबू दाऊद

इस लेख का वेब पता:
http://www.newmuslims.com/hi/lessons/135

कॉपीराइट © 2011-2022 NewMuslims.com. सर्वाधिकार सुरक्षित।

ajsultan